International Journal of Sanskrit Research 2020; 6(4): 163-167

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2020; 6(4): 163-167
© 2020 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 22-01-2020
Accepted: 14-03-2020

शत्रुघ्न कुमार
शोधार्थी, संस्कृत–विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
शत्रुघ्न कुमार
शोधार्थी, संस्कृत–विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

वाल्मीकीय रामायण के परिपेक्ष्य में महाकवि भास की रामकथा का अध्ययन एवं विश्लेषण

शत्रुघ्न कुमार

सारांश
महाकवि भास ने अपनी रामकथा में वाल्मीकीय रामकथा के कतिपय कथानकों की मौलिक उद्भावना की है, जिससे उनकी रामकथा एक नवीन स्वरूप ग्रहण कर पायी है। वल्कल प्रकरण का सौन्दर्यीकरण हो, कैकेयी की निर्दोषता हो अथवा प्रतिमा–दर्शन की अनुपम नाट्य–चित्रणादि हो। भास एक कुशल नाटककार की तरह अपनी नाट्य–कला का सृजन करते हैं। इस प्रयत्न में यद्यपि उनके कुछ कथानक अत्यंत रमणीय हैं। जैसे– प्रतिमा–दर्शन एवं सीता–हरणादि। किंतु कुछ प्रकरणों में उनकी कथात्मकता शिथिल एवं बाधित दिखायी पड़ती है। फिर भी कुल मिलाकर उनकी रामकथा, रामकथा की महान परंपरा को एक नयी दिशा देता दिखायी पड़ता है और एक प्राचीन नाटककार के रूप में उनकी महानता को दर्शाता है।

प्रस्तावना
महाकवि भास ने रामकथा के नाट्य–स्वरूपों की रचना करते हुए 'प्रतिमानाटकम्' एवं 'अभिषेकनाटकम्' में रामकथा की सृष्टि की है, जो वाल्मीकीय रामकथा पर आधारित होने के बावजूद उनसे कतिपय कथानकों में भिन्नता प्रदर्शित करते हैं। यह कथानकगत भिन्नता रामकथा के स्वरूप को नया आयाम देने का प्रयास करते हैं, जिनका परवर्ती रामकथा साहित्य पर स्पष्ट प्रभाव दिखता है। वाल्मीकीय रामकथा से भास की रामकथा के परिवर्तनों–परिवर्धनों के स्वरूपों को प्रस्तुत आलेख में प्रदर्शित किया गया है।

संस्कृत नाट्यलोक के प्रतिष्ठापकों की उपस्थिति के अनेक सूत्र वैदिक साहित्य से लेकर रामायण एवं महाभारत की रससिद्ध काव्यात्मक निधियों में दृष्टिगोचर होते है, किंतु ज्ञात नाटककारों की महामंडली के आदि नाटककार महाकवि भास हैं। महाकवि भास संस्कृत नाट्य–परंपरा के महान उद्घोषक एवं पथ–प्रदर्शक नाटककार हैं। इनकी प्रगाढ़ लोकप्रियता की चर्चा महाकवि कालिदास ने 'मालविकाग्निमित्रम्' में "प्रथितयशसां भाससौमिल्लककविपुत्रादीनां प्रबन्धानतिक्रम्य वर्तमानकवेः कालिदासस्य क्रियायां कथं बहुमानः।"[1] कहकर की है। महाकवि बाणभट्ट भास को स्मरण करते हुए कहते हैं–

सूत्रधारकृतारम्भैर्नाटकैर्बहुभूमिकैः।
सपताकैर्यशो लेभे भासो देवकुलैरिव।।

जयदेव ने तो भास को कविता कामिनी का हास कहकर उनकी प्रशंसा की है। वस्तुतः भास एक जनप्रिय एवं महान नाटककार हैं, जिनकी नाट्य–साधना के बहुआयामी स्वरूपों का संस्कृत नाट्य–जगत् पर व्यापक प्रभाव दिखता है। आचार्य बलदेव उपाध्याय भास की महत्ता रेखांकित करते हुए कहते हैं कि "नाटक को पंचम वेद होने का जो गौरव भरत ने प्रदान किया तथा कालिदास ने जो उसे 'भिन्न रूचिजनों का एकत्र समाराधन' कहा, इसकी सम्यक् परिपुष्टि भास के नाटकों से होती है। नाटक कवित्व का चरम परिपाक है– 'नाटकान्तं कवित्वम्'। उसमें तीनों लोकों के भावों का अनुवर्तन होता है। जब हम इस दृष्टि से देखते हैं तो भास की महत्ता और बढ़ जाती है।"[2]

महाकवि भास ने 'भासनाटकचक्र' के रूप में तेरह नाटकों की रचना की, जिनमें रामकथात्मक नाटकों की संख्या दो है– पहला छह अंकों का 'अभिषेकनाटकम्' और दूसरा सात अंकों का 'प्रतिमानाटकम्'। महाकवि भास के इनदोनों नाटकों में रामकथा मुख्यतः वाल्मीकीय रामायण के अनुरूप होने के बावजूद विविध स्थलों पर मौलिकता का अंतर्पुट दर्शनीय है। 'प्रतिमानाटकम्' में वन–गमन से लेकर राम–सुग्रीव मिलन और अंत में रामजी के राज्याभिषेक के प्रसंग वर्णित हैं। 'अभिषेकनाटकम्' में बालिवध से रावणवध तथा श्रीरामजी का राज्याभिषेक चित्रित है।

वाल्मीकीय रामायण के रामकथात्मक क्रम के अनुसार पहले प्रतिमानाटकम् के उपरांत अभिषेकनाटकम् का स्थान आता है। 'भावों की उत्कृष्टता एवं कलापूर्ण नाट्य प्रस्तुति' की दृष्टि से देखें तो भी पहले प्रतिमानाटकम् के उपरांत अभिषेकनाटकम् का स्थान दिखता है।

महाकवि भास की रामकथा मूलतः वाल्मीकीय रामायण पर आधारित होने के बावजूद उनसे कथात्मक भिन्नता को दर्शाता है। उन्होंने रामकथा की कलात्मकता को एक नवीन आयाम देते हुए वाल्मीकीय रामकथा में कतिपय परिवर्तन–परिवर्धन भी किये, जिसका कालांतर में रामकथा के विकास में भी खास योगदान रहा। इनके रामकथात्मक परिवर्तनों–परिवर्धनों के स्वरूपों को हम इस प्रकार देख सकते हैं–

1. श्रीरामजी का वन–गमन वृत्तांत अथवा राज्य से निर्वासन

श्रीरामजी का वन–गमन वृत्तांत रामकथा का निर्णायक एवं मार्मिक मोड़ है। वाल्मीकीय रामायण में इस प्रसंग की करुण एवं मर्मस्पर्शी उद्भावना मिलती है। महाकवि भास ने इस प्रकरण को कलात्मक एवं रसात्मक सौन्दर्य से विभूषित करने के लिए इसमें कतिपय परिवर्तन किये हैं–

(क) वल्कल प्रकरण

महाकवि भास की रामकथा का आरंभ श्रीरामजी के राज्याभिषेक की तैयारी के मध्य वल्कल प्रकरण से होता है। प्रतिमा नाटक में परिचारिका अवदातिका नाट्यदल की वेशभूषा के संग्रह से एक वल्कल उठा लाती है। सीताजी अवदातिका के हाथों में वल्कल देख कौतूहलवश उसे लेकर पहन लेती है। हास–परिहास में वल्कल पहने अपने सौंदर्य को निहारती हुई सीताजी परिचारिका से पूछती है–

"पश्य! किमिदानीं शोभते?"[3]

तब अवदातिका उसके सौंदर्य को स्वर्णयुक्त वल्कल–सा बतलाते हुए कहती है– ''तव खलु शोभते नाम। सौवर्णिकमिव वल्कलं संवृत्तम्।"[4] इसी समय सीताजी को बताया जाता है कि रामजी का राज्याभिषेक होने ही वाला है। तभी अचानक मंगलवाद्य बंद हो जाता है और रामजी का राज्याभिषेक कार्यक्रम नहीं होता है। उसके बाद रामजी महल में सीताजी के पास आते हैं और बताते हैं कि राजा दशरथ की इच्छानुकूल उनका राज्याभिषेक प्रारंभ हो गया था, तभी मंथरा के द्वारा कैकेयी के संदेश सुनकर महाराज दशरथ ने इसे रुकवा दिया और वे महल में लौट आये हैं। रामजी सीताजी को वल्कल पहने देख स्वयं वल्कल धारण की इच्छा प्रकट करते हैं। उसके बाद उन्हें भरत को राज्य और उन्हें वनवास की जानकारी मिलती है और रामजी लक्ष्मण एवं सीताजी के साथ वल्कल पहनकर वन–गमन करते हैं।

आदिकवि वाल्मीकि ने रामायण में वल्कल धारण की घटना का वर्णन वनवास जाने हेतु रामजी का पिता दशरथ से आज्ञा लेने जाने के क्रम में दशरथ के समक्ष किया है। कैकेयी रामजी, लक्ष्मणजी के साथ सीताजी को भी वल्कल पहनने को देती है। रामजी, लक्ष्मणजी इसे धारण कर लेते हैं, किंतु सीताजी को वल्कल पहनना नहीं आता है। तब रामजी की सहायता से वह वल्कल धारण करती है। यह देखकर वहाँ की स्त्रियाँ व्याकुल होकर रोने लगती है। गुरु वशिष्ठ कैकेयी को डाँटते हुए सीताजी को वल्कल धारण करने से रोकने का प्रयत्न करते हैं।यह दृश्य देखकर सबलोग राजा दशरथ को धिक्कारने लगते हैं–

तस्यां चीरं वसनायां नाथवत्यामनाथवत्।
प्रचुक्रोश जनः सर्वो धिक्त्वां दशरथं त्विति।।[5]

राजा दशरथ कैकेयी को डपटते हुए सीताजी को वल्कल न पहनने की बात कहते हैं। वे कहते हैं कि उसने रामजी को वनवास दिया है सीता को नहीं। सीताजी वस्त्राभूषण के साथ वन जायेगी–

चीराण्यपास्वाज्जनकस्य कन्या नयें प्रतिज्ञा मम दत्तपूर्वा।
यथासुखं गच्छतु राजपुत्री, वनं समग्रा सह सर्वरत्नैः।।[6]

इसके बाद सीताजी वस्त्राभूषण से युक्त होकर चौदह वर्षों तक के लिए वस्त्रादि ग्रहण करके वन–गमन करती है।

आदिकवि ने वल्कल पहनने की घटना को मार्मिक भावबोध का केंद्र बिंदु बना दिया है। सीताजी सनाथ होकर भी अनाथ की भाँति चीर वस्त्र धारण करने लगती है तो स्त्रियाँ रोने लगती है। लोग चिल्ला–चिल्लाकर दशरथजी को धिक्कारने लगते हैं। यहाँ करुण–भाव की धारा बहने लगती है, जबकि महाकवि भास इस प्रकरण में नवीन कलात्मकता प्रदर्शित करने हेतु हास–परिहास में सीताजी को वल्कल धारण करवा देते हैं। इसके साथ ही इसे कौतूहलता एवं सौंदर्य विधायक साधन के रूप में प्रस्तुत कर भास अतीव नाट्य–कुशलता का भी परिचय देते हैं। इस नाट्य–प्रयोग का वैशिष्ट्य कालांतर में संस्कृत नाट्य–परंपरा के महान हस्ताक्षरों की रचनाओं में भी दिखायी देता है। महाकवि कालिदास पर पड़े प्रभावों की चर्चा करते हुए नेमिचन्द्रशास्त्री लिखते हैं कि "इस वल्कल धारण की परंपरा का प्रभाव कालिदास पर है। उन्होंने वल्कल धारण करने पर शकुंतला की सौंदर्य समृद्धि का चित्रण किया है। दोनों ही वर्णनों में पर्याप्त समता है। यथा–

"भट्टिनी! सर्वशोभनीयं सुरूप नाम अलकरोतु।
भट्टिनी! तव खलु शोभने नाम!सौवार्णिकमिव वल्कलं सवृत्तम्।।"[7]

इस तरह इस प्रकरण का नाट्य–प्रभाव अत्यंत दूरगामी सिद्ध हुआ, जिससे संस्कृत नाट्य–परंपरा की धारा गतिशील हुई।

(ख) रामजी का वन की ओर प्रस्थान

भास की रामकथा में रामजी सीताजी एवं लक्ष्मणजी के साथ वनवास की सूचना मिलने के उपरांत महल से सीधे सुमंत्र के साथ वन की ओर प्रस्थान कर देते हैं। प्रजा उसके पीछे–पीछे नहीं जाती है। वे दशरथजी से आज्ञा लेने भी नहीं जाते हैं। महाकवि भास की यह कथात्मक भिन्नता श्रीरामजी के चरित्र के उत्कर्ष को कुछ मायनों में बाधित करती है। इसका विशेष औचित्य नहीं दिखता है। न तो यह नाटकीय कुशलता में वृद्धि करता है, न ही किसी रूप में विशेष प्रभावकारी सिद्ध होता है।

(ग) कैकेयी को वर–प्राप्ति

महर्षि वाल्मीकि के अनुसार देवासुर संग्राम में दशरथ की रक्षा करने हेतु कैकेयी को दो वर देने की घोषणा दशरथजी करते हैं, जिसे वह रामजी के राज्याभिषेक के समय माँगती है। भास इस कथानक को बदलते हुए विवाह–शुल्क के तौर पर कैकेयी द्वारा भरत को राज्य एवं रामजी को वनवास देने की बात कहते हैं। रामजी कहते हैं–

"शुल्के विपणितं राज्यं पुत्रार्थे यदि याच्यते।
तस्या लोभोऽत्र नास्माकं भ्रातृराज्यापहारिणाम्।।"[8]

स्पष्टतः महाकवि भास इस कथानक के माध्यम से सामाजिक जीवन के कटु सत्य को दर्शाते हैं कि समाज में शुल्क के बंधन से भी विवाह प्रचलित था। इससे कथानक के विस्तार को यथार्थ सामाजिक स्वरूप मिलता है। इसका उपयोग भास ने अपनी रचनाओं में नाट्य–कुशलता के साथ किया है।

(घ) कैकेयी के चरित्र की निर्दोषता

महाकवि भास ने कैकेयी के चरित्र की निर्दोषता दर्शाने का भरसक प्रयत्न किया है। वे कथानक को बदलते हुए सीता–हरण से व्यथित भरत को शांत करवाने के क्रम में सुमंत्र द्वारा महाराज दशरथ के शापित होने की बात बतलाते हैं। कैकेयी 'अंधमुनि पुत्र–वध से शापित दशरथजी की कथा को जानती है और उसे चरितार्थ करने के लिए रामजी का वनवास माँगती है, न कि राज्यलोभ से। यह बात वशिष्ठ आदि गुरुजनों को भी ज्ञात है। भरत यह सुनकर अत्यंत लज्जित होते हैं और कहते हैं–

"हन्त त्रैलोक्यसाक्षिणः खल्वेते।दिष्ट्यानपराद्धत्र भवती।अम्ब!"[9]

वाल्मीकि रामायण में भी 'अंधमुनि–पुत्रवध' की घटना है किंतु उसकी चर्चा मरन्नासन दशरथजी द्वारा कौशल्या से बातचीत के प्रसंग में की गयी है। महाकवि भास इस घटना से कैकेयी के चरित्र की आदर्शवादिता प्रदर्शित करने का प्रयास करते हैं। कामिल बुल्के इस प्रकरण को स्पष्ट करते हुए बताते हैं कि "प्रतिमा नाटक में कैकेयी के दोष–निवारण के लिए एक अन्य मार्ग अपनाया गया है।ऋषि शाप के फलस्वरूप पुत्रवियोग के कारण दशरथ का मरण अनिवार्य जानकर कैकेयी ने उस शाप की रक्षा करने के लिए राम को किसी और विकट विपत्ति से बचाने के लिए वशिष्ठ, वामदेव आदि से परामर्श करने के पश्चात् राम को वन भिजवाया था।"10

यद्यपि इस कथानक परिवर्तन से कैकेयी के चरित्र की दोषमुक्ति तो हुई, किंतु मूल रामकथा की भावधारा यहाँ खंडित होती दिखती है। फिर भी कैकेयी के चरित्र–परिवर्तन का यह प्रयोग परवर्ती नाटककारों की चेतना पर स्पष्ट रूप से पड़ा है। महाकवि भवभूति का 'महावीरचरितम्' हो या मुरारि कवि का 'अनर्घराघव' यहाँ भी कैकेयी के चरित्र की निर्दोषता प्रदर्शित की गयी है।

(ङ) अयोध्या में शत्रुघ्न की उपस्थिति

महाकवि भास ने श्रीरामजी के राज्याभिषेक के प्रकरण में लक्ष्मणजी के साथ शत्रुघ्न को भी उपस्थित करवाया है। श्रीरामजी के राज्याभिषेक के समय लक्ष्मणजी के साथ शत्रुघ्न भी तीर्थ का धट संभाले हुए है। श्रीरामजी सीताजी को कहते हैं–

"शत्रुघ्नलक्ष्मणगृहीतेघटेऽभिषेके छात्रा स्वयं नृपातिना रूदता गृहीते।"[11]

इसके बावजूद वन–गमन प्रकरण में उनकी स्थिति की चर्चा नहीं दिखती है।

वाल्मीकि रामायण में वे भरतजी के साथ उनके ननिहाल गये हुए दिखायी देते हैं। भास ने भरतजी से बड़ा लक्ष्मणजी को बताया है। वन में लक्ष्मणजी से मिलने पर भरतजी उनका अभिवादन करते हुए कहते हैं कि–"एवं, गुरुरयम्। आर्य? अभिवादये।"[12]

महाकवि भास के ये कथात्मक परिवर्तन वस्तुतः वाल्मीकीय रामकथा के कथानक की प्रवाहपूर्ण सहजता को कुछ हद तक बाधित करते हैं। इसका विशेष नाटकीय प्रभाव भी नहीं दिखता है। ये प्रसंग इस ओर भी संकेत करते प्रतीत होते हैं कि भास के समय में वाल्मीकीय रामायण की कथा उसी रूप में उस हद तक प्रचलित तथा लोकगृहित नहीं थी, जितना बाद में रही है; अन्यथा इस प्रकार का परिवर्तन सामान्यतः कोई नाटककार नहीं करेगा।

2. दशरथ–मरण

महाकवि भास दशरथ–मरण की घटना को नया रूप देते हुए रामजी के वियोग से व्यथित मरणासन्न दशरथजी के समक्ष उनके पूर्वजों का आगमन प्रदर्शित करते हैं। वाल्मीकीय रामायण में यहाँ 'अंधमुनि–पुत्रवध' वर्णित है, वहीं भास ने राजा दिलीप, रघु एवं अज की उपस्थिति करवायी है, जो दशरथजी को स्वर्ग लेकर जाते हैं।

वाल्मीकि रामायण में इच्छवाकु राजाओं की जो वंशावली बालकांड के ७०वें सर्ग में प्रस्तुत की गयी है, उसके अनुसार दिलीप से भगीरथ, भगीरथ से ककुत्थ और ककुत्थ से रघु का जन्म होता है। रघु के उपरांत १२वें पीढ़ी के रूप में अज का जन्म हुआ। वे नाभाग के पुत्र थे। अज से दशरथ का जन्म हुआ किंतु भास ने यहाँ दिलीप, रघु, अज एवं दशरथ को क्रमशः पिता पुत्र के रूप में वर्णित किया है।

कालांतर में संस्कृत के महान नाटककारों ने भास की वंशावली को ग्रहण किया है। कालिदास ने 'रघुवंशम्' में भास के सदृश ही इक्ष्वाकु राजाओं की वंशावली प्रदर्शित की है। हरिवंशपुराण में भी इसी वंशावली को ग्रहण किया गया है।

3. प्रतिमा–दर्शन

महाकवि भास के नाट्य–सौंदर्य का अप्रतिम चित्रण 'प्रतिमा दर्शन' के प्रकरण में दिखता है। ज्ञात रामकथा के प्रसंग में यह पूर्णतः भास की मौलिक कल्पना की गौरवस्थली है। भास भरत को ननिहाल से अयोध्या प्रवेश के पूर्व इक्ष्वाकु राजाओं की 'प्रतिमागृह' का दर्शन करवाते हैं। भरत गुरू की आज्ञावश कृत्तिका नक्षत्र व्यतीत होने के उपरांत रोहिणी नक्षत्र में अयोध्या में प्रवेश के क्रम में 'प्रतिमा–गृह' देखने जाते हैं। वहाँ वे दिलीप, रघु, अज के साथ अपने पिता दशरथ की प्रतिमा देख और उनकी मृत्यु तथा रामजी का वनवास सुनकर अचेत हो जाते हैं। उसी समय सुमंत्र का राजमाताओं को 'प्रतिमा–दर्शन' के बहाने आगमन होता है और वह भरत को धैर्य दिलाते हैं। भरत वहीं अपनी माता को इस कार्य के निमित्त काफी फटकारता है।

भास ने इस प्रकरण के माध्यम से कलात्मक नाट्य–कौशल को कथात्मक प्रवाहशीलता से जोड़कर कथानक की भावभूमि को विस्तृत आयाम प्रदान किया है। यहाँ भरत की आकस्मिक कौतुकता के मध्य 'प्रतिमा–दर्शन' की स्थिति जहाँ एक ओर कुशलता से नाट्यकला का प्रदर्शन करता है वहीं दूसरी ओर तत्कालीन सामाजिक जीवन का यह दृश्य भी दिखलाता है कि भास के समय में राजाओं की 'प्रतिमा–गृह' की परंपरा प्रचलित थी। इस प्रकरण की ऐतिहासिकता प्रदर्शित करते हुए आचार्य बलदेव उपाध्याय कहते हैं कि "प्रतिमा नाटक में भास ने एक नवीन कल्पना को कथानक के परिबृंहण में लगाया है। 'देवकुल' की कल्पना उस युग की एक मान्य कल्पना थी, जब प्रत्येक राजा के महल में एक पृथक् मंदिर प्रतिष्ठित था, जिसमें राजा की मृत्यु के अनंतर उसकी पाषाणमूर्ति वहाँ स्थापित की जाती थी। यह भास की कोरी कल्पना नहीं है, प्रत्युत ऐतिहासिक तथ्य पर आधारित है। अजातशत्रु तथा बिंबिसार की पुरुषाकृति मूर्तियों से इस तथ्य की पर्याप्त पुष्टि होती है।"[13]

इसके अलावा भास ने वाल्मीकीय रामायण में शत्रुघ्न द्वारा मंथरा को घसीटने के प्रकरण का लोप करके उनके कथानक को भी निर्दोष बना दिया है। इस प्रकरण की कलात्मक उत्कृष्टता के कारण इस नाटक का नाम 'प्रतिमानाटकम्' रखा गया।

भास का यह प्रकरण इतना लोकप्रिय हुआ कि परवर्त्ती नाटककारों ने अपनी रामकथा में इससे प्रेरणा लेकर नये कथानक की सृष्टि की। रामकथा के महान नाटककार भवभूति की अनुपम कृत्ति 'उत्तररामचरितम्' में 'चित्र–दर्शन' की कल्पना इस प्रकरण से प्रभावित दिखती है। नेमिचंद्रशास्त्री लिखते हैं कि "भास" ने प्रतिमागृह संबंधी कल्पना कर नाटक को एक नया ही मोड़ दिया है। उनकी इस कल्पना का प्रभाव भवभूति के उत्तर रामचरित के चित्र–विधि कल्पना पर भी प्राप्त होता है।"[14]

4.वन में राम–भरत मिलन

भास ने भरत को अयोध्या आगमन के पश्चात् श्रीरामजी से मिलने वन में अकेले सुमंत्र के साथ जाने का वर्णन किया है। वन में भरत के राज्यग्रहण के अनुरोध को श्रीरामजी अस्वीकार कर देते हैं और अपनी शपथ देकर राज्य–ग्रहण करने के लिए वापस भेज देते हैं।

भरत श्रीरामजी की चरण–पादुका लेकर तथा १४ वर्षों के उपरांत श्रीरामजी द्वारा राज्यग्रहण की बात मानने पर वापस आते हैं।
वाल्मीकीय रामायण से इतर भास का यह कथात्मक परिवर्तन अनेक मायनों में भावावेश की प्रगाढ़ता एवं कथात्मक उत्कृष्टता की दृष्टि से पिछड़ा हुआ दिखायी देता है। यहाँ वाल्मीकीय रामायण के अनेक महत्त्वपूर्ण कथानकों को छोड़ दिया गया है। जैसे निषादराज गुह, भरद्वाज मुनि आदि प्रसंग। इन प्रकरणों को आदिकवि वाल्मीकि ने बड़ी उदात्तता से चित्रित किया है, जिसका अभाव भास के नाटकों में खटकता है। हालाँकि यह इस दृष्टि से क्षम्य है कि भास महाकाव्य न लिखकर नाटक लिख रहे थे, जिसमें समय की अनिवार्य सीमा होती है।

5.सीता–हरण

रामकथा के कथावृत्त का केंद्रीय एवं मार्मिक दृश्य सीता–हरण की घटना है। वाल्मीकीय कथा से भिन्न महाकवि भास ने इस कथानक की कथाभूमि को बड़ी सूझ–बूझ से गढ़ा है। कथानक में श्रीरामजी सीताजी के साथ पिताजी का वार्षिक श्राद्ध करने के तरीकों पर चर्चा करते हैं। तभी रावण संन्यासी वेश में आता है और रामजी को हिमालय पर रहने वाले काञ्चनपार्श्व नामक मृग से श्राद्ध में पितृतर्पण करने का परामर्श देता है। रामजी मृग हेतु हिमालय जाने को तैयार होते हैं उसी समय मारीच काञ्चनपार्श्व मृग बनकर वहीं आ जाता है। श्रीरामजी उसे पकड़ने के लिए जाते हैं और सीताजी को संन्यासी वेषधारी रावण से बातचीत करने को कहते हैं। लक्ष्मण कुटिया में नहीं होता है, वह तीर्थयात्रा से आये कुलपति की आगवानी करने गया होता है। इसी अवसर का लाभ उठाकर रावण सीता–हरण का दुस्साहस करता है। जटायु रावण को सीता–हरण से रोकने का प्रयत्न करता है और घायल होकर मारा जाता है।
भास ने यहाँ सीताजी के चरित्र की उज्जवलता को एक नया रूप दिया है। वाल्मीकीय रामकथा में मायावी मारीच की पुकार सुनकर सीताजी लक्ष्मणजी को रामजी की सहायता हेतु जाने को कहती है, किन्तु लक्ष्मणजी श्रीरामजी की सीता–रक्षा के आदेश का उल्लंघन नहीं करना चाहते हैं। तब सीताजी लक्ष्मण को कटु वचनों से आहत करती है। भास ने सीताजी को इन उद्वेलनों से बचाया है। इसके साथ ही सीताजी के 'कनक–मृग' प्राप्ति की मोह–ग्रस्तता को समाप्त करके भास ने श्राद्ध के अवसर को उपस्थित करके 'मृग–प्राप्ति' की कथा को एक व्यावहारिक आधार प्रदान किया है। इसके साथ–साथ भासकालीन सामाजिक जीवन में श्राद्ध–कर्म की महत्ता भी यहाँ प्रदर्शित की गयी है, जिसके कारण रामजी वार्षिक श्राद्ध के अवसर पर पितृतर्पण की सर्वोत्कृष्ट व्यवस्था का प्रयत्न करते हुए दिखते हैं। इस कथानक–परिवर्तन का प्रभाव भी संस्कृत नाट्य–परंपरा पर दिखायी देता है, जहाँ नाटककारों ने सीताजी के उदात्त चारित्रिक वैभव को अपनी काल्पनिक कथाभूमि पर प्रदर्शित किया है।

6. सुमंत्र का राम–दर्शन हेतु पुनः वनागमन

वाल्मीकि रामकथा से अलग भास वनवास के समय में रामजी की स्थिति को देखने सुमंत्र को अकेले जाते दिखलाते हैं ।वापस आकर वे भरत को सीता–हरण और राम–सुग्रीव मिलन की सूचना देते हैं। इस परिवर्तन का विशेष प्रभाव भास की रामकथा के कथात्मक चरित्र पर नहीं दिखायी पड़ता है। कलात्मक स्तर पर कैकेयी–भरत संवाद को यहाँ जोड़कर कैकेयी की चारित्रिक दुर्बलता को दूर किया गया दिखायी देता है।

7. बालि–वध

'अभिषेकनाटकम्' के प्रारंभ में बालिवध की घटना को भास ने दर्शाया है। भास ने इस प्रकरण को वाल्मीकीय रामकथा के अनुकूल ही रखा है केवल सुग्रीव–बालि के मध्य एक ही द्वन्द्व–युध्य दर्शाया है, जिसमें रामजी पराजित होते हुए सुग्रीव की रक्षाकर रामजी छिपकर बालिवध करते हैं। वाल्मीकीय रामकथा में पहले सुग्रीव–बालि द्वन्द्व–युध्द में रामजी सुग्रीव–बालि के समान आकृति एवं रूप होने से सुग्रीव की सहायता नहीं करते है, जिससे वह पराजित होकर आता है। तब रामजी उसे गजपुष्प की माला रूपी पहचान–चिह्न देकर दूसरी बार युद्ध हेतु भेजते हैं। इसमें सुग्रीव को पराजित होता देख एक बाण से ही बालि को धराशायी कर देते हैं। बालि के पूछने पर अनुज भार्या के साथ अधर्म–युक्त आचरण के कारण उसे दंडित किया गया है, यह रामजी कहते हैं। रामजी से दंडित होकर वह दोष मुक्त हो जाता है। महाकवि भास बालि की दोषमुक्ति दर्शाते हुए बालि के मुख से कहवाते है––– "भवता दण्डितत्वाद् विगतपापोऽहं ननु।"15 और उसके बाद वह स्वर्ग चला जाता है।
यहाँ भास वाल्मीकीय रामकथा से भिन्न बालिपत्नी तारा को बालि का अंतिम दर्शन नहीं करवाते हैं केवल पार्श्व से रंगमंच पर उनके रूदन की ध्वनि आती है। भास ने यह परिवर्तन नाटकोचित व्यवहारिकता के कारण उचित ही किया है। किन्तु भास ने यहाँ अर्थात् बालि–वध को तथा पहले दशरथ–मरण को रंगमंच पर दर्शाया है, जो कि भरत–नाट्यशास्त्र की धारणा के विपरीत है। इससे यह भी सिद्ध होता है कि महाकवि भास नाट्यशास्त्र के प्रचलित परंपरा से पूर्व हुए थे इसी कारण उन्होंने भरत नाट्यशास्त्र के नियमों की अवहेलना की है।

8. सीता–अन्वेषण–वृत्तांत

भास के सीता–अन्वेषण के कथानक में एक विरोधाभास दिखता है। 'प्रतिमा नाटक' में जटायु सीता की रक्षा हेतु रावण से युद्ध करता है और वीरगति को प्राप्त होता है। अभिषेक नाटक में हनुमानजी को सीता का पता भी जटायु बताता है और उनकी सूचना पर ही वे लंका में सीताजी से मिलते हैं। यहाँ इस स्पष्टीकरण का अभाव खटकता है कि यह जटायु कौन है? पूर्ववर्ती जटायु नहीं तो कौन है? यह भास की कतिपय अनवधानताओं को दर्शाता है।

9.लंका–अभियान

वाल्मीकीय रामकथा से अलग भास के लंका–अभियान की भिन्नता इस प्रकार है:

(क) समुद्र–पार करना:

भास ने अपनी रामकथा में श्रीरामजी के बाण–संधान से भयभीत होकर समुद्र को बीच से मार्ग देने का उल्लेख किया है।

(ख) रामजी का मायामय शीर्ष (सिर)

वाल्मीकीय रामायण में यह प्रसंग युद्धारंभ से पूर्व का है, जबकि भास ने इसे कुंभकर्ण–वध के उपरांत और मेघनाद–युद्ध के समय प्रदर्शित किया है। रावण सीता को रामजी का मायामय शीर्ष दिखलाते हैं और सीताजी विलाप करने लगती हैं। तभी रावण को सूचना मिलती है कि मेघनाद का वध लक्ष्मणजी द्वारा किया गया। इससे सीताजी का शोक कम होता और क्रोधित रावण उसे मारना चाहता है, तब सभासद उन्हें ऐसा करने से रोक देते हैं। इस प्रकार यहाँ भास ने कथा–क्रम की आकस्मिकता का ऐसा उत्तम निर्वाह किया है कि इससे दर्शकों की कौतुक–वृत्ति का विकास होता रहता है, जो इसे एक लोकप्रिय एवं सफल नाटक बनाता है।

10. सीताजी की अग्नि–परीक्षा

'अग्नि–परीक्षा' की कथा भी वाल्मीकीय रामायण के सदृश ही भास ने दर्शाया है। सीताजी अग्नि–परीक्षा देती है तभी रामजी उसे ग्रहण करते हैं।
आदिकवि तथा भास दोनों ने दर्शाया है कि अग्नि–परीक्षा के उपरांत रामजी कहते हैं कि मैं तो सीता को पवित्र मानता था केवल लोकापवाद को समाप्त करने के लिए ऐसा किया। भास ने यहाँ रामजी की द्वन्द्वात्मकता को अधिक स्पष्ट करते हुए सीताजी को अग्नि–प्रवेश के समय रोकने का असफल प्रयत्न करते हुए

दर्शाया है। इससे यहाँ नाटकीय–कौतूकता के साथ मानव–मन की स्वाभाविकता भी प्रदर्शित होती है।

11. श्रीरामजी का राज्याभिषेक

महाकवि भास अपने दोनों नाटकों को रामजी के राज्याभिषेक के उपरांत समाप्त करते हैं। 'अभिषेक नाटक' का नामकरण इसी राज्याभिषेक की घटना को द्योतित करती है।

'प्रतिमा नाटक' में भास ने वाल्मीकीय रामकथा से अलग रामजी का राज्याभिषेक जनस्थान में करवाते हैं। भरत ससैन्य एवं गुरु–राजमाताओं आदि के साथ रामजी की सहायता हेतु लंका जाने के लिए निकलते हैं और जनस्थान पहुँचते हैं, तब ही रामजी रावण–वध के उपरांत पुष्पक विमान से जनस्थान पहुँचते हैं, जहाँ उनका राज्याभिषेक होता है। इसके साथ ही रामकथा का पटाक्षेप हो जाता है।

भास ने श्रीरामजी के राज्याभिषेक जैसे प्रसंग को बदलकर नाटकीयता के आकर्षण को अक्षुण्ण रखने का प्रयत्न किया है, किन्तु इससे यहाँ भी कथात्मकता का स्वाभाविक प्रवाह बाधित होता दिखता है। साथ–ही–साथ राज्याभिषेक जैसे प्रकरण को भास ने जिस प्रकार नया स्वरूप दिया है उससे यह भी सिद्ध होता है कि उस समय वाल्मीकीय रामायण का वैसा प्रसार नहीं हुआ था जैसा कालांतर में हुआ।

वस्तुतः महाकवि भास की रामकथा का रचना–विधान अनेक दृष्टियों से संस्कृत नाट्य–परंपरा को एक नयी दिशा देनेवाला सिद्ध हुआ है। आचार्य बलदेव उपाध्याय इनके प्रभाव–क्षेत्र को निरूपित करते हुए कहते हैं कि "भास का अनुकरण पिछले युग के नाटककारों ने बड़े आग्रह के साथ किया, विशेषतः कालिदास और शूद्रक ने। कालिदास के नाटकों में भास के रूपकों के साथ भाव तथा संविधान में घनिष्ठ साम्य है। कालिदास के नाटकों में विशेष स्निग्धता तथा विशेष कला का दर्शन अवश्य मिलता है, परंतु कतिपय उपादानों के लिए वे भास के ऋणी प्रतीत होते हैं। शाकुंतल के चतुर्थ अंक में वृक्षलतादिकों के प्रति शकुंतला के कोमल भावों की जो अभिव्यंजना मिलती है (पातुं न प्रथमं व्यवस्थति जलं युष्माष्वपीतेषु या) वह अभिषेक नाटक के मंदोदरी विषयक भावभंगी से नितांत साम्य रखती है (यस्यां न प्रियमण्डलापि महिषी देवस्य मन्दोदरी–चतुर्थ अंक)।"16 भास की रामकथा में कथात्मक वैभव के साथ–साथ तत्कालीन जीवन का विहंगम दृश्य भी प्रदर्शित होता है। राधावल्लभ त्रिपाठी कहते हैं कि "भास अपने सभी बड़े नाटकों में अपने समय को मूर्त करते हैं। सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक स्थितियों का विशद चित्र उनके रूपकों में मिलता है।"17

सचमुच भास की रामकथा की विशिष्टता अनेकत्र दृष्टिगोचर होती है। चाहे वल्कल प्रकरण की प्रतिष्ठा हो,अथवा प्रतिमा–दर्शन का कलात्मक वैशिष्ट्य या सीता–हरण का कथानक आदि भास ने यहाँ उत्कृष्ट नाट्य–कला प्रदर्शित किया है, किंतु वाल्मीकीय रामायण के परिप्रेक्ष्य में इनका कथानक अनेक जगहों पर काफी शिथिल एवं सीमित भी दिखता है। जैसे वन में राम–भरत मिलन आदि। इसके अलावा उन्होंने वाल्मीकीय रामकथा के अनेक महत्त्वपूर्ण प्रसंगों को भी प्रदर्शित नहीं किया है। बालकांड के कथानक का कोई विशेष उल्लेख नहीं मिलता है। केवल दशरथजी की वंशावली का वर्णन मिलता है। अहल्या प्रकरण हो या अयोध्याकांड का निषादराज गुह, भरद्वाजादि वृत्तांत इसे प्रदर्शित नहीं किया गया है। भास ने संपूर्ण उत्तरकांड की घटना को भी अपनी रामकथा में नहीं दर्शाया है; हालाँकि यह नाटकीय विधान के अनुरूप ही है और उचित भी। भास के कालक्रम के अनुसार भी यह उचित है। इसके अलावा भास की रामकथा में जटायु की स्थिति को लेकर विरोधाभास दिखता है। भरत को लक्ष्मण से छोटा दिखाना हो अथवा श्रीरामजी के वन–गमन के समय अयोध्या में शत्रुघ्न को उपस्थित करके उनकी उपेक्षा करना हो यह भास की रामकथा की उदात्तता को सीमित करता है। एक महान नाटककार होते हुए भी भास रामकथा को वैसा आकार और आयाम नहीं दे पाये हैं, जैसा कि भवभूति आदि ने दिया है। इस तरह भास की रामकथा निःसंदेह अपने मौलिक भावबोध के स्तर पर अनूठे हैं, किंतु कथा के स्तर पर वाल्मीकीय रामायण के विशाल काव्यात्मक गौरव–शिखर के समक्ष न्यून ही दिखायी पड़ते हैं। एक प्रारंभिक नाटककार के रूप में निस्सन्देह उनका महत्त्व अक्षुण्ण है और प्रासंगिक भी।

निष्कर्ष

एक प्राचीन नाटककार होने के बावजूद महाकवि भास रामकथा–परंपरा को एक नवीन दिशा प्रदान करते हैं, जिसमें कलापूर्ण नाटकों के माध्यम से रामकथा की भव्य एवं सरस सृष्टि की जाती है। वाल्मीकीय रामकथा से कथात्मक सरसता में न्यून होने के बावजूद उनकी रामकथा का नाट्यात्मक एवं काव्यात्मक सौंदर्य अनुपम है, जो निःसंदेह संस्कृत–साहित्य की अमूल्य धरोहर हैं।

संदर्भ

1. मालविकाग्निमित्रम्, महाकवि कालिदास, चौखंबा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी, पृष्ठ–4
2. महाकवि भासः एक अध्ययन, आचार्य बलदेव उपाध्याय, चौखंबा विद्याभवन वाराणसी, प्रथम संस्करण– विक्रम संवत्–२०२१, पृष्ठ–3
3. प्रतिमानाटकम्, महाकवि भास, भासनाटकचक्रम् के द्वितीय खंड में सम्मिलित, चौखंबा विद्याभवन वाराणसी, द्वितीय संस्करण–2009, पृष्ठ–20
4. वही, पृष्ठ–21
5. वाल्मीकि रामायण (2/38/1) हिंदी भाषांतर सहित, महर्षि वाल्मीकि, प्रथम खंड, गीताप्रेस गोरखपुर, संस्करण संवत्–२०६५,
6. वाल्मीकीय रामायण (2/38/6), पूर्वोक्त संस्कृत के आदि नाटककार महाकवि भास, नेमिचन्द्र शास्त्री, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, प्रथम संस्करण–1972, पृष्ठ–200
7. प्रतिमानाटकम् (1/15), महाकवि भास, पूर्वोक्त
8. प्रतिमानाटकम्, पूर्वोक्त, पृष्ठ–194
9. रामकथा, फ़ादर कामिल बुल्के, लोकभारती प्रकाशन, पुनर्मुद्रण–2018, पृष्ठ–321
10. प्रतिमानाटकम् (1/7), पूर्वोक्त
11. प्रतिमानाटकम्, पूर्वोक्त, पृष्ठ–130
12. संस्कृत साहित्य का इतिहास, आचार्य बलदेव उपाध्याय, शारदा निकेतन वाराणसी, पुनर्मुद्रण–2001, पृष्ठ–493
13. संस्कृत के आदि नाटककार महाकवि भास, नेमिचन्द्र शास्त्री, पूर्वोक्त, पृष्ठ–167
14. अभिषेकनाटकम्, महाकवि भास, भासनाटकचक्रम् के प्रथम खंड में सम्मिलित, चौखंबा विद्याभवन वाराणसी, द्वितीय संस्करण–2009, पृष्ठ–15
15. संस्कृत साहित्य का इतिहास, आचार्य बलदेव उपाध्याय, पूर्वोक्त, पृष्ठ–497
16. संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास, राधावल्लभ त्रिपाठी, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी, चतुर्थ संस्करण–2013, पृष्ठ–158